प्रश्न 2—एक व्यवस्था के रूप में संरचनावाद के विकास में टिचनर का योगदान बतलाओ।

Describe the contribution of Titchener to development of structuralism as a system.

उत्तर—

टिचनर का योगदान
(Contribution of Titechener)

मनोविज्ञान के संरचनावाद सम्प्रदाय का आरम्भ टिचनर (Titchener) से माना जाता है और इसीलिये प्रायः इसे टिचनर के नाम से संयुक्त किया जाता है। इसे टिचनर का संरचनावाद (Titchener's Structuralism) या टिचनर सम्प्रदाय (Titchener School) भी कहा जाता है। अमेरिका में इसका आरम्भ लगभग सन् 1890 से माना जाता है। जर्मनी में तो यह 1879 में ही आरम्भ हो चुका था और वुन्ट (Wundt) के प्रयत्नों से इसका पर्याप्त विकास हो रहा था।

टिचनर का जन्म स्थान इंगलैंड था और यहीं पर ऑक्सफोर्ड (Oxford) यूनिवर्सिटी में बी० ए० तक उसकी शिक्षा हुई थी। बाद में वह जर्मनी चला गया था और यहाँ पर लाइपजिग यूनिवर्सिटी (Leipzig University) में उसने मनोविज्ञान का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। उन दिनों लाइपजिग में वुन्ट (Wundt) भी

Scanned with CamScanner

मनोविज्ञान पर अनुसंधान कार्य कर रहा था। टिचनर को यहाँ पर वुन्ट के निर्देशन में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 1892 में उसने मनोविज्ञान में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की। यह उल्लेखनीय है कि लाइपजिग में अपने दो वर्ष के अध्ययन प्रवास के दौरान में उसने बहुत कुछ सीखा और वह वुन्ट से बहुत प्रभावित हुआ। उसकी रुचि शारीरिक और प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में थी। साहचर्यवादी मनोविज्ञान में उसकी रुचि नहीं थी।

1892 में उसने अमेरिका की कार्नेल यूनिवर्सिटी (Cornell University) में अध्यापन कार्य स्वीकार कर लिया। अध्यापन के अतिरिक्त उसे मनोविज्ञान प्रयोगशाला का निर्देशक भी बनाया गया। उसने उस प्रयोगशाला को नये सिरे से संगठित किया और अपनी प्रतिभा और वुन्ट के सिद्धान्तों के आधार पर इसे उच्च कोटि का बना दिया। यहीं पर कार्य करते हुए उसने बहुत से महत्वपूर्ण तथ्य प्रतिपादित किये और संरचनावाद सम्प्रदाय को जन्म दिया।

यद्यपि टिचनर ने अपना कार्यक्षेत्र अमेरिका को बनाया तथापि उसने अमरीकी संस्कृति को नहीं अपनाया। उसकी संस्कृति ब्रिटिश थी। उसने उसका बौद्धिक विकास भी अपना लिया था। अमेरिका में उसने जीवन पर्यन्त इन्हीं के आधार पर अपने मनो-वैज्ञानिक विचारों को व्यक्त किया। संरचनावाद भी जर्मनी से ही प्रारम्भ हुआ था और टिचनर के प्रयत्नों एवं गहन अध्ययन तथा निरन्तर अनुसंधान कार्य से और सबसे बढ़ कर उसके जर्मन एवं ब्रिटिश तरीकों से विचार करने से अमेरिका में इसका विकास हुआ।

व्यवस्था के रूप में संरचनावाद
(Structuralism as a System)

संरचनावाद के अनुसार मनुष्य की चेतना (Consciousness) विभिन्न मानसिक क्षमताओं का योग होती है। चेतना की व्याख्या करते हुए विभिन्न मानसिक क्रियाओं का विश्लेषण किया जाता है। चेतना के स्वरूप में मानसिक तत्वों का विशेष स्थान होता है। ये मानसिक तत्व होते हैं—संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान, ध्यान, कल्पना इत्यादि। इन्हीं के योग से चेतना बनती है।

इस प्रकार संरचनावाद शक्ति मनोविज्ञान (Faculty Psychology) से भिन्न है। शक्ति मनोविज्ञान में मानसिक तत्वों-संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना इत्यादि को मानसिक शक्तियां माना जाता है और इनको एक दूसरे से पृथक माना जाता है और उनके योग को चेतना कहा जाता है।

संरचनावाद और साहचर्यवाद (Associationism) में भी अन्तर है। साहचर्यवाद में संवेदना को मानसिक अनुभव की इकाई माना जाता है। विभिन्न संवेदनों के साहचर्य (Association) में प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना, ध्यान, विचार इत्यादि मानसिक क्रियायें होती हैं। अन्य शब्दों में, प्रत्येक मानसिक क्रिया का आधार निश्चित रूप से संवेदनों का साहचर्य होता है। परन्तु संरचनावाद में इस प्रकार का नहीं होता। संर-

Scanned with CamScanner

चनावाद में तो संवेदन को एक पृथक् मानसिक तत्व माना जाता है और प्रत्यक्ष ज्ञान, ध्यान इत्यादि को भी मानसिक तत्व ही माना जाता है तथा इसके योग को चेतना कहा जाता है। इनके अतिरिक्त संरचनावाद का आधार प्रयोगात्मक है। इसका विकास मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से सम्बद्ध है। लेकिन साहचर्यवाद के तथ्यों का प्रयोगात्मक अध्ययन सम्भव नहीं है क्योंकि इनका आधार वैज्ञानिक नहीं होता।

संरचनावादी मनोविज्ञान को अस्तित्ववादी (Existentialist) मनोविज्ञान और अन्तर्दर्शनात्मक (Introspective) मनोविज्ञान भी कहते हैं। वास्तव में संरचनावादी मनोविज्ञान अन्तर्दर्शन पद्धति पर आधारित है और इसीलिये इसे अन्तर्दर्शनात्मक मनोविज्ञान भी कहा जाता है। अन्तर्दर्शन पद्धति को ही टिचनर ने अपनाया।

जैसा कि पीछे बतलाया जा चुका है, संरचनावाद का प्रारम्भ टिचनर से हुआ और इसके विकास का श्रेय भी टिचनर को प्राप्त है। इसीलिये सरचनावाद और टिचनर का नाम साथ-साथ जाना जाता है और इस सम्प्रदाय को टिचनर सम्प्रदाय के नाम से सम्बोधित किया जाता है। अतः संरचनावाद का अध्ययन करने के लिये हमें टिचनर के मनोवैज्ञानिक विचारों से परिचित होना चाहिये जिनका क्रमबद्ध अध्ययन इस प्रकार है—

(1) वैज्ञानिक आधार (Scientific Basis)—टिचनर ने अपने अध्ययन का आधार वैज्ञानिक बनाया। वह मूलरूप से वैज्ञानिक विचारक था और दार्शनिक मनोविज्ञान में उसकी रुचि नहीं थी। अतः संरचनावाद का आधार भी वैज्ञानिक है और वैज्ञानिक पद्धति की वस्तुनिष्ठता के आधार पर ही यह अध्ययन किया गया कि मानसिक दशाओं का एक अनुक्रम है। ये दशायें वह होती हैं जिनकी मनुष्य को चेतना होती है। जिस मानसिक दशा की मनुष्य को चेतना नहीं होती, उसका अस्तित्व ही नहीं होता। चूंकि व्यक्ति अपनी मानसिक दशाओं का स्वयं ही अनुभव करता है, अत. मानसिक दशाओं का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है और ये दशायें व्यक्ति की चेतना में होती हैं। इन दशाओं के क्रम को मन और चेतना कहते हैं। इनका अध्ययन अन्तर्दर्शन (Introspection) पद्धति से किया जाता है। यह पद्धति पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है।

(2) भावना (Feeling)—मनोविज्ञान की विषयवस्तु व्यक्ति के अनुभव होते हैं। उसमें इन्हीं का अध्ययन किया जाता है। ये अनुभव 'कर्त्ता' पर निर्भर होते हैं और हमेशा व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित होते हैं। व्यक्ति ही नहीं होगा तो अनुभव कहाँ से होंगे ?

संरचनावाद में अनुभव का आधार स्नायुमण्डल (Nervous System) को माना गया है। स्नायुमण्डल के माध्यम से ही व्यक्ति को अनुभव होते हैं और व्यक्ति के अनुभवों का अध्ययन करने के साथ उसके स्नायुमण्डल और मस्तिष्क प्रक्रिया का भी अध्ययन किया जाता है ?

Scanned with CamScanner

(3) मन और चेतना (Mind and Consciousness)—मन क्या है? मन की व्याख्या करते हुए संरचनावाद में इसे व्यक्ति के जीवन भर में हुए मानसिक अनुभवों का योग कहा गया है। परन्तु वे मानसिक अनुभव जो किसी समय विशेष पर होते हैं सम्मिलित होकर चेतना बन जाते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि जीवन भर की मानसिक प्रक्रियायें मिलकर मन बनती हैं और किसी समय विशेष की मानसिक क्रियायें मिलकर चेतना। यही मन और चेतना में अन्तर होता है।

संरचनावाद में मन और चेतना के स्वरूप का अध्ययन विश्लेषण द्वारा होता है क्योंकि मन और चेतना की संरचना का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इनका विश्लेषण अत्यावश्यक है। विश्लेषण के द्वारा ही मन और चेतना के विभिन्न मानसिक तत्वों का अध्ययन होता है। यह विश्लेषण अन्तर्दर्शनात्मक होता है। व्यक्ति विशेष अपने विचारों को स्वयं का प्रेक्षण (Observe) करके अनुभव का वैज्ञानिक अध्ययन कर सकता है। चूंकि मनोविज्ञान का प्रमुख कार्य ही यह है कि मन की संरचना का ज्ञान प्राप्त हो अतः यह विधि अति उपयोगी है।

(4) मानसिक तत्व (Mental Elements)—व्यक्ति के अनुभवों की इकाई मानसिक तत्व हैं। संरचनावादी मनोविज्ञान में मन और चेतना को इन्हीं मानसिक तत्वों का योग माना जाता है। इन दोनों में जो अन्तर माना जाता है उसके विषय में पीछे बताया ही जा चुका है। मन और चेतना का अध्ययन इन्हीं मानसिक तत्वों के आधार पर किया जाता है। मन की संरचना तीन मानसिक तत्वों के योग से हुई है। ये तत्व हैं, क्रमशः सवेदन (Sensation), भावना (Feeling) और प्रतिमा (Image)।

(i) संवेदन (Sensation)—संवेदन प्रत्यक्ष ज्ञान का आधार होता है। अन्य शब्दों में, प्रत्यक्ष ज्ञान संवेदन के ही माध्यम से होता है। व्यक्ति अपनी इन्द्रियों से जो भी ज्ञान करता है सभी संवेदन के आधार पर होता है। उदाहरण के लिये हम सभी क्रियाओं, जैसे सुनना, देखना, सूंघना, स्पर्श करना इत्यादि का अध्ययन कर सकते हैं। इसीलिये संवेदन को प्रत्यक्ष ज्ञान के विशेष तत्व (Characteristic elements) के रूप में जाना जाता है।

(ii) भावना (Feelins)—दूसरा मानसिक तत्व भावना होता है जिससे कि मन की संरचना होती है। भावना व्यक्ति के संवेगों में पाई जाती है। अन्य शब्दों में, संवेग का आधार भावना होती है। अतः संवेग के विशेष तत्वों (Characteristic elements) को भावना कहते हैं। उदाहरण के लिये प्रेम, आनन्द, घृणा इत्यादि किसी भी संवेग को लिया जा सकता है और उसके आधार में भावना को अनुभव किया जा सकता है।

(iii) प्रतिमा (Image)—तृतीय मानसिक तत्व प्रतिमा होता है। प्रतिमा का सम्बन्ध स्मृति (Memory) और कल्पना से होता है। ये विचार के विशेष तत्व

Scanned with CamScanner

होते हैं। स्मृति और कल्पना का आधार प्रतिमा होता है और इसके बिना ये दोनों ही सम्भव नहीं हैं। वास्तव में पूर्व प्रतिमाओं का स्मरण ही स्मृति और इसके आधार पर भावी घटनाओं और सम्भावनाओं पर कल्पना की जाती है।

मानसिक तत्वों की विशेषतायें—मानसिक तत्वों की प्रमुखतया चार विशेषतायें—गुण (Quality), गहनता (Intensity), अवधि (Duration) और स्पष्टता (Clearness) पाई जाती हैं।

विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—(i) **गुण** (Quality)—गुण वह विशेषता होती है जो कि एक वस्तु को दूसरी से पृथक करती है। यह विशेषता उपरोक्त तीनों मानसिक तत्वों में पाई जाती है। इस विशेषता के उदाहरण हैं—लाल, हरा, नीला, गरम इत्यादि गुण जिनके आधार पर वस्तुओं की भिन्नता ज्ञात होती है। एक वस्तु यदि लाल है और दूसरी नीली तो यह लाल और नीला उसके गुण हैं जिनसे कि दोनों भिन्न होती हैं।

(ii) **गहनता** (Intensity)—इस विशेषता के द्वारा वस्तु के गुण की मात्रा (Quantity) का अनुमान होता है। यह भी तीनों मानसिक तत्वों में पाई जाती है। यह विभिन्न मात्राओं में वस्तुओं में होती है और इसे न्यूनतम से अधिकतम दोनों सीमा बिन्दुओं के बीच कहीं भी मापा जा सकता है।

(iii) **अवधि** (Duration)—यह विशेषता भी सभी मानसिक तत्वों में उपस्थित होती है। यह किसी मानसिक तत्व के विकास, स्थिरता और ह्रास को समय की दृष्टि से बतलाती है।

(iv) **स्पष्टता** (Clearness)—इस विशेषता से यह पता लगता है कि कोई मानसिक तत्व कितनी स्पष्टता से व्यक्ति की चेतना में उपस्थित है। यह मुख्यतया संवेदन और प्रतिमा में दृष्टिगोचर होती है और साधारणतया भावना में इसका अभाव होता है।

उपरोक्त चार विशेषतायें किसी न किसी मात्रा में मानसिक तत्वों में अवश्य पाई जाती हैं। परन्तु इन विशेषताओं के अतिरिक्त भी कुछ विशेषताएँ है जो कि मानसिक तत्वों में पाई जाती हैं इस प्रकार की एक विशेषता है विस्तार। कोई मानसिक तत्व कितने विस्तार में पाया जाता है यह भी एक विशेषता है और यह सीमा से सम्बन्धित होती है।

(5) **मन और शरीर** (Mind and Body)—संरचनावाद में मन और शरीर में कार्य और कारण (Cause and effect) का सम्बन्ध नहीं माना गया है वरन् इनका सम्बन्ध एक दूसरे के समानान्तर (Parallel) माना गया है। मन के द्वारा शारीरिक परिवर्तन सम्भव नहीं है और इसी प्रकार शरीर द्वारा कोई मानसिक क्रिया नहीं होती है किन्तु शरीर और मन मिलकर ऐसी व्यवस्था करते हैं जिससे मानसिक क्रियाएँ होती हैं।

Scanned with CamScanner

इस विषय में स्मरणीय है कि टिचनर द्वारा संरचनावाद में शरीर और मन के समानान्तर सम्बन्ध पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया। यह देखा गया है कि जब शरीर में कोई परिवर्तन हो जाता है तब मन में भी किसी न किसी प्रकार का परिवर्तन अवश्य हो जाता है। हाँ, यह ठीक है कि शरीर के आधार पर कोई मानसिक प्रक्रिया नहीं होती।

(6) ध्यान (Attention)—संरचनावादी मनोविज्ञान के अध्ययन में अन्तर्वस्तु (Content) पर बल दिया गया है। यह माना गया है कि प्रत्येक अनुभव एक ऐसी वस्तु है जिसका वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव है। अतः ध्यान का अध्ययन चेतना के प्रतिमान (Pattern) के रूप में किया जाता है। ध्यान को चेतना में बनने वाला प्रतिमान कहा गया है। चेतना में अनुभवों का ऐसा प्रतिमान बन जाता है कि व्यक्ति का ध्यान किसी विषय अथवा विचार की ओर आकर्षित हो जाता है। संरचनावाद में ध्यान की व्याख्या में प्रकार्य (Function) का कोई महत्व नहीं है।

(7) अध्ययन पद्धति (Method of Study)—संरचनावादी मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धति अन्तर्दर्शन (Introspection) है। टिचनर ने इस पद्धति के बारे में बतलाया है कि वास्तव में यह पद्धति नहीं है वरन् एक प्रकार का प्रेक्षण (Observation) है। संरचनावादी मनोविज्ञान का आधार वैज्ञानिक है अतः इसकी अध्ययन पद्धति प्रेक्षण पर ही आधारित होनी चाहिये। मनोविज्ञान में अध्ययन के लिये मानसिक अनुभवों का प्रेक्षणकर्त्ता वास्तव में वही व्यक्ति होता है जो कि उनसे सम्बन्धित होता है अर्थात् जिसके वे अनुभव होते हैं। अन्य शब्दों में, जब व्यक्ति विशेष अपने अनुभवों का प्रेक्षण करता है तो इसे अन्तर्दर्शन कहते हैं।

अन्तर्दर्शन के बारे में कभी-कभी यह मान लिया जाता है कि अपने अनुभवों का विश्लेषण करते हुए व्यक्ति जो कुछ भी अण्ट-सण्ट बोल जाए सारा मनोवैज्ञानिक अध्ययन होता है। टिचनर ने इस धारणा का खण्डन करते हुए बतलाया है कि अन्तर्दर्शन ऐसा प्रेक्षण है जिसमें व्यक्ति नियन्त्रित दशा में और एक निश्चित विषय के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करता है। इस प्रकार टिचनर ने अन्तर्दर्शन पद्धति का क्षेत्र निश्चित कर दिया है।

मनोविज्ञान के अध्ययन में ध्यान रखने योग्य बात है कि इसके लिये व्यक्ति वह चुना जाए जो कि अन्तर्दर्शन की पद्धति से परिचित हो। संरचनावाद में इसीलिये अन्तर्दर्शन सम्बन्धी प्रशिक्षण को महत्व दिया जाता है। प्रशिक्षित व्यक्ति अपना अन्तर्दर्शनात्मक (Introspective) विवरण भली-भाँति दे सकता है और उसके मानसिक अनुभवों का अध्ययन भी सुगमता से तथा सफलतापूर्वक किया जा सकता है। साधारण व्यक्ति, जो कि इस विधि से किंचित भी परिचित नहीं है, सभी मानसिक प्रक्रियाओं को भली-भाँति नहीं बतला सकता और साथ ही वह मानसिक तत्वों का महत्व भी नहीं समझ सकता। संरचनावाद में व्यक्तिगत (Personal)

Scanned with CamScanner

बातों को कोई महत्व प्राप्त नहीं है। इसमें तो मानसिक तत्वों का स्थान ही प्रमुख है अत: वैयक्तिक भिन्नता को छोड़ते हुए, संरचनावाद अन्तर्दर्शनात्मक विश्लेषण पर बल देता है।

प्रश्न 3—संरचनावाद पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिये।

Write a critical note on structuralism.

उत्तर—आलोचना और मूल्यांकन—संरचनावाद मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय है और इसका मनोविज्ञान में योगदान कुछ कम नहीं है। संक्षेप में, इसका मूल्यांकन करते हुए हम कह सकते हैं कि संरचनावाद ने मनोविज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति पर बल दिया। अन्तर्दर्शन पद्धति से संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों ने एक नवीन प्रवृत्ति को आरम्भ किया और इसी के द्वारा संवेदन, भावना और प्रतिमा इन तीनों मानसिक तत्वों का विशद् अध्ययन किया गया।

व्यक्ति के अनुभवों में कैसे मानसिक तत्व होते हैं—इसका ज्ञान संरचनावाद से ही हुआ। संरचनावाद ने मन और चेतना के विश्लेषण पर बल दिया और मानसिक तत्वों के आधार पर इनके स्वरूप का अध्ययन किया।

इस विषय में यह स्मरणीय है कि संरचनावाद की आलोचना भी हुई है। मुख्य बात यह है कि संरचनावाद ने मन की समग्रता और प्रकार्य पर बल नहीं दिया। इसके अतिरिक्त मानसिक अनुभवों की व्याख्या भी अधिकतर निर्जीव और यान्त्रिक हुई है। कारण यह है कि अन्तर्दर्शन से व्यक्ति के जीवन संघर्षों का भली प्रकार अध्ययन नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त अभिप्रेरण, व्यक्तित्व और समंजन इत्यादि का संरचनावाद में अधिक विवेचन नहीं किया गया।

परन्तु उपरोक्त सभी आलोचनाओं के होते हुये भी हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि संरचनावाद से मनोविज्ञान में जो योगदान हुआ है वह बहुत महत्वपूर्ण है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के विकास को संरचनावाद से बहुत बल प्राप्त हुआ और संरचनावाद सम्प्रदाय ने अपने समय की मांग पूरी की। अत: यह कहना उपयुक्त है कि "Beyond question the psychology of Titchener played a major role in the development of American psychology, not only as a distinct and lasting achievement but also as a gallant and enlightening faliure."

Scanned with CamScanner